वर्ष २१ अंक ४
अगस्त १९७८ [वार्षिक मूल्य १०)
एक प्रति १)

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	४
अगस्त	सन् १९७८
श्रावण	सं० २०३५

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

प्रकाशक

चिरौली सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं०

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(३) गम खाओ अर्थात बर्दाश्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ४] अगस्त १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

आरती सतगुरु की

सुरत आज लगी चरन गुरु धाय, श्याम तज सेत ग्राम ठहराय।
देख निज नाली बंक समाय, तिकुटी चढ़कर पहुँची आय॥
हिये बिच पंकज अजब खिलाय, सेत पद धजा अगम फहराय।
हंस जहाँ बाजे रहे बजाय, गुरू अस लीला दई दिखाय॥
रागनी नइ नइ नित्त सुनाय, भेद सब अक्षर दीन बताय।
घाट निःअक्षर पाया जाय, गुफा में धुन इक सुनी बनाय॥
पदम सत निरखा भरम नसाय, बीन धुन पाई सुरत जगाय।
अलख और अगम रहा दरसाय, परे तिस राधास्वामी धाम मिलाय॥
जहाँ अब आरत साज सजाय, लिये मैं राधास्वामी खूब रिझाय।
कहूँ क्या महिमा बरनी न जाय, सुरत मेरी छिनछिन रही मुसकाय॥
राधास्वामी लीला कहूँ छिपाय, लिया मोहि अपने अंग लगाय।
आरती पूरा कीन्ही आय, कहूं क्या अस्तुत२ राधास्वामी गाय॥
परम पद पाया काल भजाय; वेद भी रहा बहुत शरमाय।
भेद यह मिला न अब तक काय, दया कर राधास्वामी दिया जनाय॥
करूँ अब आरत उनकी गाय, सुरत मेरी राधास्वामी लीन जगाय।
जोग और ज्ञान रहे मुरझाय, संत कोइ बिरले दिया सुझाय॥
राधास्वामी अचरज खेल दिखाय, चरन में राधास्वामी गई समाय।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक
अगस्त सन

बचन महराज साहब--

आदत का असर और उसके बदलने का जतन

सुभाव यानी आदत का असर बड़ा प्रबल होता है। उसका पलटना महा कठिन काम है, गोया जानवर से इनसान बनाना है। जैसे रस्सी जल जाती है पर ऐंठन नहीं जाती, ऐसे ही और विकारी अंग छूट जाते हैं, पर स्वभाव नहीं बदलता। देखो सरकस का बन्दर, कि वह कितना ही सिखलाया जाता है, पर उसका बन्दरपन नहीं जाता। जब वक्त आता है, तब भूल जाता है और जो पुराना सुभाव है, वह उस पर गालिब हो जाता है। इसी तरह जिसमें जो स्वभाव प्रबल है, वह देर अबेर अपना इजहार और असर जरूर पैदा करता है। मसलन शराबी हैं, वह बहुतेरी कसमे खाते हैं कि फिर कभी शराब नहीं पियेंगे, मगर जब वक्त आता है, तब भूल जाते हैं, जैसे फस्द, जो लोग जिन दिनों में खुलवाते हैं, फिर उन्हीं अइयाम में खून उसी तरफ रुजू करता है. इसी तरह पुरानी आदत शराब पीने की जो उन के खून में पैवस्त हो गई है, वह अपना इजहार करती है। उनका गोया खून पुकारता है, इसलिये लाचार हो जाते हैं। लोग उनको हजो करते हैं और हकीर निगाह से देखते हैं, मगर वह अपनी आदत की गिरफ्तारी से अपने को बचा नहीं सकते हैं। कुछ साल हुए एक साहब विलायत गये थे। वहाँ उनको शराब पीने की आदत पड़ गई। नतीजा यह हुआ कि फालिज गिरा और प घन्टे में मर गये। लोग अपने तईं तहस नहस और गारत कर देते हैं, मकरूज हो जाते हैं तो भी अपनी खराब आदत नहीं छोड़ते।

२—बनारस में एक शख्स था। उस को घोड़े पर सवार होने की बड़ी आदत थी। एक बड़ा शोख घोड़ा आया। उस पर चढ़ने लगा। लोगों ने बहुत ही मना किया, पर वह नहीं माना। काल उसके सिर पर सवार था, चढ़ते ही वह गिर पड़ा और मर गया। लोभ के मारे रामचन्द्र सोने की हिरनी के पीछे पड़े। इतना भी सोच विचार न किया कि सोने की हिरनी कैसे हो सक्ती है। असल में जब शामत घेर लेती है, बड़े बड़े धीरजवान और दानिशमन्द भी बेवकूफ बन जाते हैं। कहने का मुद्दा यह है कि जिससे खास ताल्लुक है, उसका खराब आदत छोड़ने के लिये समझा बुझा देना फर्ज है और जो वह नही माने तो उसको छोड़ देना चाहिये।

जो कोई समझे सैन में तासों कहिये बैन।
सैन बैन समझे नहीं तासों कुछ नहिं कहन॥

राधास्वामी कही बनाई।
जो नहिं मानो भुगतो भाई॥

Scanned with CamScanner

३—साध महात्मा की सरन में जो आता है, उसका सुभाव इस तरह बदलाया जाता है कि या तो उसका चोला छुड़ा देते हैं और कुछ अर्से उसको ऊँचे स्थान पर आब हवा बदलने के लिये रखते हैं या सतसंग और अभ्यास कराके और गढ़त का रगड़ा देके जीते जी मौत की हद पर पहुंचा देते है। इस तरह सुभाव बदल जाता है। समझौती से काम नहीं होता है। खोफ और लालच जब तक है, तब तक तो मन सीधा चलता है और जब वह दूर हो गया तब फिर मन टेढ़े का टेढ़ा हो जाता है, मसलन चिड़िया, तोते, को जब खाने का लालच दिया जाता है या बन्दर को लकड़ी का खौफ रहता है तब तक वह सीधे चलते हैं और जब खाना या लकड़ी हटा ली जाती है, तब वह बे-तकल्लुफ अपने स्वभाव में बरतने लगते हैं। बन्दर जिस वक्त कि सरकस में है, हरचन्द साहब का ड्रेस यानी पोशाक पहने हुये हैं, पर उसी वक्त जो मौका मिला तो कोई चाज वगैरा खसोटने और शरारत करने लगा। इसी तरह पहले साधू लोगों का आगरे से जहां निकलने का मौका मिलता था, बे-तकल्लुफ चरनामृत और पर-शादा लोगों को देने लगते थे। धन भी लेते थे और अपने तई पुजवाते भी थे। अब यह आजादी नहीं है। इसी से घबराते हैं। आजादी में बड़ा हर्ज और नुकसान है। महिमा इसकी है प्रभुता होते हुए भी अपने को बचाये रक्खे। दरख्त जो कि फलदार होता है, उसको जिस कदर लोग झोका देते हैं, उतना ही ज्यादा मेवा देता है। इसी तरह जिस तन में भक्ति रूपी फल फूल लगे हुए हैं, उनको जिस कदर कोई तङ्ग करता है, उतना ही ज्यादा वह दया, गरीबी, दीनता और प्रीत भाव करते हैं।

४—सख्ती करना और दुख देना मालिक को मंजूर नहीं है। ब-दरजे लाचारी कर्म काटने और सुभाव बदलने के लिये उसने यह रचा रक्खा है। मन पर थोड़ा बहुत दाब होना मुफीद है। लड़का जब तक उस्ताद के सामने है, तब तक सीधा है और जहां उस्ताद बाहर निकला, क्या तमाशा करता है। ऐसे ही मन की भी हालत है। यह किसी को नहीं समझना चाहिये कि हमारा मन सीधा हो गया है।

मन को मिरतक देख के, मत माने विश्वास।
साध जहां लौं भय करें जब लग पिंजर स्वाँस॥
मैं जानूं मन मर गया, मर कर हुआ भूत।
मूये पीछे उठ लगा, ऐसा मेरा पूत॥

५—जैसे रावन का लड़ाई में एक सीस कटता था तो दस और निकल आते थे, ऐसे ही मन का एक अंग मरता है, दस और अंग जागते हैं। कटा दरख्त जिस की जड़ अभी बाकी है, उसका ऐतबार नहीं करना चाहिये कि अब नहीं उगेगा, जब मौका आवेगा तब फिर उस में नई नई डालियां और हरे हरे पत्ते निकल आवेंगे। इसी तरह आपा जो कि मूल विकार और जड़ है, जब तक मौजूद है, तब तक यकीन नहीं करना चाहिये कि मन मर गया।

६—मन को मारने और सुभाव बदलने का इलाज दुख और तकलीफ है। सुख और आराम में मन और मोटा होता है।

दुख की घड़ी गनीमत जानो।
नाम गुरू का पल पल भजना॥
सुख में गाफिल रहत सदा नर।
मन तरंग में दम दम बहना॥
ताते चेत करो सतसंगत।
दुख सुख नदियां पार उतरना॥

७—यही जरिया है इसकी प्रीत प्रतीत जगाने और पुरानी आदत पलटने का। सब का स्वभाव बदलाया जायगा। इस जन्म में नहीं बदला तो दूसरे में जरूर बदलेगा। गरज कि

Scanned with CamScanner

चार जनम में सतगुरु दयाल पूरा काम बना देंगे। पहले जनम में अब कुछ सफाई होगी, तब यह अन्तर में चढ़ाई के काबिल होगा। सिवाय सतगुरु दयाल के और किसी की ताकत नहीं है कि जनमान-जनम का जो पुराना मसाला और सुभाव है, उसको पलट सके। पूरे गुरु का संग करने से इसके आसुरी और हैवानी अंग बदलते हैं और इसकी प्रीत और प्रतीत जागती है। तब यह सच्चा सच्चा तन मन धन गुरु पर वार देता है और यह कहता है।

क्या वारूँ गुरु पर आई।
तन मन धन तुच्छ दिखाई॥
सुर्त अंस तुम्हारी प्यारी।
अब सर्वस हुई तुम्हारी॥
जस जानो लव सम्हारी।
चरनन में रहूँ सदा री॥

८–और मन तो ऐसा ढीठ है कि बहुतेरा इसको समझौती दो, मानता ही नहीं है। उलटा गुरु को दुख पहुँचाने को तैयार होता है। और कुटुम्बियों से जो प्रीत करने की आदत है, उनके हरचन्द इसको दुख तकलीफ होती है तो भी उनको नहीं छोड़ता है।

मन चंचल कहा न माने,
मैं कौन उपाय करूं॥
गुरु नित समझावें साध बुझावें,
सतसंग में चित जोड़ धरूँ॥
सुन सुन बचन बहुत पछताऊं,
बहुर भुलावे भर्म रहूं॥
गुरु को दुख पहुँचावन चाहे,
क्यों नहीं मेरा आदर कीत॥
जोरू लड़के गाली देवें,
मूंछ पकड़ वह खेंच खिंचीत॥
उनकी ताड़ मार नित सहता,
उनसे तो भी मन न फिरीत॥
उनकी प्रीत लगी अस दृढ़ होय,
लोहे की संगलीत॥
अब तो चेत जरा तू हे मन,
त्याग पशू की रीत॥

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)

काशी में गंगा के उस पार रेती प

१५ फरवरी से २५ फरवरी १९७९ तक

आपको भी निमन्त्रण है। अवश्य आवें।

Scanned with CamScanner

सृष्टि की रचना क्यों और कैसे

(सतसंग स्वामी जी महराज साकेत यज्ञ अहमदाबाद दिनांक २-१-१९७८ रात्रि ७-३० बजे ।)

सीधे, धीरे धीरे अधिकार की थी। मान की थी। उस समय अभिमान ने उसे जकड़ा।

जब अभिमान ने इसे जकड़ा और किसी चीज ने नहीं। तब धीरे धीरे अभिमान में जकड़ते जकड़ते, जकड़ते जकड़ते सात्विकता का अभिमान सत्यता का अभिमान चैतन्यता का अभिमान, प्रकाश का अभिमान। उस अभिमान में जकड़ते जकड़ते, जकड़ते जकड़ते बहुत दिन हो गये।

तो जकड़ते जकड़ते इस जीवात्मा की यह दशा हो गई। अब महापुरुषों की कृपा और दया चाहिये।

अब मैं आप को ऐसा उत्तम पवित्र सतसंग जिसको आप अपने शब्दों में अध्यात्मवाद कहते हैं और हम उसे कहते हैं सुरतवाद।

गौतम तिय पद परसत
नहिं परसत पद पान।
सखि कहे पद परसो सीता।

शील, क्षमा, सन्तोष विरह विवेक ये सखियाँ कहती हैं जीवात्मा देख ये प्रभु के चरण हैं। इन्हें जल्दी से जल्दी पकड़ ले। लेकिन आप तो भूल गये क्या किया जाय?

बाबा जी बहुत कुछ चेष्टा कर रहे। लेकिन अब धीरे धीरे उन महापुरुषों की भक्तों की मेहनत सफल होती है और धीरे धीरे हो जायेगी सफल। यह उनकी सफलता और उनकी मेहनत किसी शुद्ध उद्देश्य के लिए होती है। और जीवात्माओं के लिए होती है।

एक अट्ठासी द्वीप निवासा।
हंस करें जहां सदा विलासा॥

अब महापुरुष कहते हैं कि सत्त लोक में अट्ठासी द्वीप हैं सारी को सारी रुहें, जीवात्मायें हंस रूप में निर्मल पवित्र रूप में, निवास करती हैं आनन्द करती हैं। किसी प्रकार का वहाँ कोई क्लेश का नाम निशान नहीं। आने जाने का कोई नाम निशान नहीं। राज पाट की कोई बात नहीं। छोटे बड़े यह सब गलीज गन्दगी कुछ नहीं है किसी प्रकार की न मौत का डर है न इसका सब आनन्द से विलास करते हैं और एक एक रुह, एक एक जीवात्मा इतना बड़ा इस मण्डल में विस्तार करती है कि ऐसे ऐसे अनन्तों मण्डल एक एक जीवात्मा उन मण्डलों में बना कर के फिर नाश कर देती हैं। यह जीवात्माओं को वहां पर खेल और दृश्य देखने का यह अधिकार उनको स्वतः प्राप्त है।

वहां की जीवात्मा समर्थ होती है

तो जब इतने इतने बड़े मण्डल एक-एक जीवात्मा वहां पर विस्तार कर ले और समझ ले तो उनको कितना बड़ा अधिकार होगा? यह तो आप सोच सकते हो। और वह अगर इस मृत्यु लोक में एक पावर लेकर शक्ति लेकर प्रादुर्भाव इस मनुष्य रूपी किराये के

Scanned with CamScanner

मकान में लेकर बैठे तो कितना बड़ा काम करेगी इस जगत का। बहुत बड़ा काम कर लेगी। वह इससे सम्बन्धित है जुड़ी हुई है और आती और जाती है। सारा सन्देशा इधर उधर का ले आती है।

यहां भी गुप्तचर सूचना देते रहते हैं

यहां दिल्ली के बहुत से गुप्तचर रहते हैं, जो दिल्ली की सरकार को अपना सन्देशा जगह जगह का सारे देश का देते हैं। जो इन सब आत्माओं का सन्देशा वहां देते हैं। इस तरह का विधान सारी आत्माएँ रो रही हैं। चिल्ला रही हैं। तड़प रही हैं रास्ता नहीं मिल रहा है। विचार कीजिए, दया कीजिए, कृपा कीजिए।

सन्त जन उधर के गुप्तचर हैं।

तो उसके गुप्तचर संतजन जो उसको जानते हैं इधर का सन्देश देते हैं। और इधर के गुप्तचर उनके कर्मचारी इधर से उधर से अलग अलग देते हैं। इधर का भी समाचार उधर मिलता है। और उधर का भी समाचार इधर मिलता है।

सन्त हमेशा यहां भारत भूमि पर आते रहे है

ये संतों का हमेशा प्रादुर्भाव भारत भूमि पर होता रहा। और यह होता रहेगा। आपके सामने यह मैं जरूर जानता हूं कि यह इतना निर्मल पवित्र सन्देश आत्माओं के जागरण उत्थान और निज घर में पहुँचने के लिए सब दुःखों से निवृत होने के लिए जरा देर में समझ में आयेगा। लेकिन थोड़े दिन में समझ में आ जाएगा। ऐसा मुझे पूरा पूरा विश्वास है। और प्रभु की इसी प्रकार से कृपा जगत पर होने जा रही। जगत से मतलब है आत्माओं पर होने जा रही है। और सामूहिक दया उसकी होने जा रही है। इस प्रकार की प्रार्थना बहुत दिनों से चल रही थी कि कोई ऐसा सुयोग ऐसा समय ऐसा कार्य ऐसा अवसर नर नारियों के लिए दया कर दे दीजिए सामूहिक अवसर आकर मिल जाय अपनी आत्माओं के हित में कल्याण में जागरण में। उसी प्रकार का आगे समय आपके लिए आने वाला है।

यह सन्देश हर धर्म के लोगो को मिलता रहा है

और यह सब संकेत यह सब सन्देश और पैगाम हिन्दू मुसलमान सभी कौम और जाति के आदमियों के लिए सबके लिए सुनाए जा रहे हैं और सब समय आने पर सिद्ध और सत्य हो जायंगे। मुसलमान अपनी किताबों को कहेंगे सत्य और हकीकत है। हिन्दू अपनी किताबों को कहेंगे बिलकुल सत्य कहा है। ईसाई अपनी किताबों को कहेंगे बिलकुल Truth हैं। सब अपनी अपनी किताबें खोल कर यह कहेंगे कि यह हमारी किताबों में लिखा हुआ। यह हमारी किताबों में लिखा हुआ। यह हमारी किताबों में लिखा हुआ। ये सब मजहब के लोग एक समय आयेगा सबके सब चिल्लाने लगेंगे।

बात समझ में आ जायेगी तब सब ठीक होगा

बात अपनी जगह पर पहले भी थी और अब भी हैं लेकिन समयानुसार कुछ आजादी और कुछ ऐसा समय आया जिससे आपने समझा कि संसार में बहुत कुछ मिल जायगा। और आप उलझ गए, फंस गये। फिर उसके बाद जब वह बात समझ में आपके आ जायगी तो फिर आप समझने लगेंगे।

तो यह बहुत बड़ा आपके लिए सन्देश है। जीवात्मा किस तरह से इस परदेश में उतार कर किसे काम के लिए भेजी

Scanned with CamScanner